



आजाबुख



केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान समाचार पत्र
www.cirg.res.in



शीघ्र शंवाद...



कुल 15.2 करोड़ बकरी संख्या के साथ भारत विश्व का सबसे बड़ा बकरी पालक देश है। तथापि आज भी भारतवर्ष में बकरी पालन पारम्परिक रूप से ही किया जाता है और यह वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित नहीं है। पारम्परिक बकरी पालन में आमतौर से बकरी पालक कम (5 से 10) बकरियाँ पालते हैं और उन्हें चराई के अतिरिक्त दाना, आवास और स्वास्थ्य जैसी सुविधायें नहीं प्रदान की जाती हैं। आमतौर पर बेरोजगार युवक या परिवार के बूढ़े व्यक्ति को बकरी चराई का काम दिया जाता है और श्रम के रूप में कुछ भी खर्च नहीं किया जाता। इस प्रकार शून्य लागत से बकरी पालन से कुल प्राप्त लाभ के रूप में देखी जाती है। इस परिस्थिति में खरीद-फरोख्त के समय पशु की आयु, उत्पादन लागत, बाजार की मांग का आमतौर पर ध्यान नहीं रखा जाता है। साधारणतः पारम्परिक बकरी पालक किसानों की जोखिम/हानि उठाने की क्षमता बहुत कम होती है।

व्यापारिक बकरी पालन लाभ कमाने के लिए तथा व्यापार के रूप में किया जाता है ताकि वर्ष भर नियमित रूप से आमदनी होती रहे। यहाँ पर बकरियों की लगातार उपलब्धता के लिए अच्छी संख्या (100 या उससे अधिक) में बकरियों को रखा जाता है। इतनी बड़ी संख्या में रखी गई बकरियों के लिए एक व्यवस्थित आवास, चराई तथा रेबड़ के विभिन्न क्रियाकलापों के लिए श्रमिक की आवश्यकता होती है। ऐसे

रेबड़ में पशुओं को उनकी विभिन्न दैहिक परिस्थितियों जैसे गर्भ काल, दुग्धकाल एवं वृद्धिकाल की आवश्यकतानुसार अतिरिक्त दाना भी प्रदान करना पड़ता है। इसी प्रकार प्रजननशील बकरों के प्रबन्धन पर भी अतिरिक्त खर्चा आता है। अधिक संख्या में होने से बकरियों के व्यापारिक रेबड़ में स्वास्थ्य प्रबन्धन की समस्याएँ भी आने की सम्भावना अधिक होती है। विशेष रूप से पी.पी.आर., कोक्सीडियोसिस, पैरा ट्यूबरक्लोसिस एवं अंतः कृमि जैसी समस्या का प्रबन्धन आवश्यक है। उपरोक्त सभी चीजों के प्रबन्धन के लिए किसान को अतिरिक्त खर्च और श्रम की आवश्यकता होती है जिसके कारण व्यापारिक बकरी पालन पारम्परिक से कहीं अधिक खर्चीला है। बकरी फसल को बेचने के लिए किसान को विज्ञापन, पशु प्रदर्शनी एवं पुरस्कार वितरण जैसी चीजों का आयोजन भी व्यापारिक बकरी पालन के महत्वपूर्ण अंग हैं। ताकि बाजार में अपने उत्पाद की बिक्री के लिए सद्भावना तैयार की जा सकती है। लेखा जोखा व्यापारिक बकरी पालन का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसमें आय और व्यय का विवरण रखा जाता है। उपरोक्त वर्णित विभिन्न पहलुओं के कारण व्यापारिक बकरी पालन अपने शैशवकाल में बहुत लाभकारी व्यवसाय नहीं है और धन लोलुप उद्यमी इसे शीघ्र छोड़ देते हैं।

व्यापारिक बकरी पालन को लाभकारी व्यवसाय बनाने के लिए नियमित एवं टिकाऊ प्रयासों की आवश्यकता है। उपरोक्त सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए एक वैज्ञानिक पहल करने से व्यव्यायिक बकरी पालन पुष्ट होगा। बकरी आहार एवं स्वास्थ्य प्रबन्धन अति महत्वपूर्ण है। पौष्टिक किन्तु सस्ते आहार के साथ वर्ष भर स्वास्थ्य कलैन्डर का लागू करना सफल बकरी पालन की कुंजी है। आशा करता हूँ कि आने वाले समय में बकरी पालकों के अनुभव और सहयोग से बकरी पालन को शीघ्र ही एक व्यापारिक व्यवसाय के रूप में स्थापित किया जा सकेगा।

एस.के. अग्रवाल
निदेशक

संपादक मंडल : अध्यक्ष- दिनेश कुमार शर्मा, सदस्य- भुवनेश्वर राय, विवेक गुप्ता, हरिऔध तिवारी, टंकण- अरूण सिंहल, छायांकन- सतीश चन्द्रा

संस्थान शोध सलाहकार समिति की बैठक



29 मई, 2013 को केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान में शोध सलाहकार समिति की समीक्षा डा. बी. प्रभाकर राव, उपकुलपति, पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, तिरुपति की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने भागीदारी की जिनमें डा. एस. के. द्विवेदी, डा. आर. जे. शर्मा, डा. के. कुमानन एवं डा. एस. कृष्णन मुख्य थे। समिति ने

संस्थान में चल रही सभी शोध परियोजनाओं की समीक्षा कर अपने सुझाव दिये। बैठक में संस्थान वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए समिति अध्यक्ष डा. प्रभाकर राव ने संस्थान में विकसित तकनीकियों को किसानों तक पहुंचाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का 25 प्रतिशत समय किसानों के साथ बिताया जाना चाहिए और दुर्गम स्थानों पर संस्थान तकनीकियों का पहुँचना हमें सुनिश्चित करना चाहिए। डा. राव ने बकरी पालन व्यवसाय में महिला श्रम के महत्व को स्वीकारते हुए कहा कि संस्थान द्वारा अधिकाधिक महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। समिति सदस्य डा. द्विवेदी ने वर्तमान परिस्थितियों की चरागाह सम्बन्धित समस्याओं को देखते हुए चारा उत्पादन एवं संरक्षण पर जोर दिया। डा. कुमानन का विचार था कि रूमन स्थित सूक्ष्माणुओं के व्यवहार/प्रभाव में हेर-फेर कर निम्नस्तरीय आहार को उपयोग में लाने की दिशा में कार्य किया जाना चाहिए। समिति सदस्यों ने संस्थान में राष्ट्रीय स्तर की बकरी रोग निदान प्रयोगशाला स्थापित करने पर जोर दिया। संस्थान निदेशक डा. एस. के. अग्रवाल ने औपचारिक रूप से समिति सदस्यों का स्वागत किया तथा संस्थान की वैज्ञानिक गतिविधियों से परिचय कराया।

संस्थान प्रबंध समिति

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदूम की संस्थान प्रबन्धन समिति की बैठक दिनांक 12 जून, 2013 को सम्पन्न हुई। संस्थान निदेशक डा. एस.के. अग्रवाल की अध्यक्षता में आहूत इस बैठक में जाने माने पशु वैज्ञानिकों ने अपना योगदान दिया। प्रबन्धन समिति के अन्य सदस्यों में डा. एस. सी. वाष्णेय, उपकुलपति, उ.प्र. पं दीन दयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं गौ अनुसंधान संस्थान, मथुरा, डा. धीरेन्द्र सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर, डा. संजीव कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, डा. जी. तरु शर्मा, विभागाध्यक्ष पशु दैहिकी, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर तथा सतेन्द्र कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम मुख्य थे। बैठक में संस्थान के विकास एवं प्रबन्धन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गयी। आगामी वर्ष में परियोजनाओं के लिए आवश्यक उपकरणों की खरीद फरोख्त एवं निर्माण कार्य को समिति द्वारा स्वीकृति



प्रदान की गई। सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न बैठक के उपरान्त निदेशक महोदय ने सभी समिति सदस्यों के योगदान के लिए धन्यवाद दिया।

बकरी प्रक्षेत्र : अभिलेखन के लाभ

ग्रामीण परिस्थितियों में अच्छे बकरी पालक 50 से 200 तक की संख्या में बकरी पालते देखे गये हैं। उचित प्रजनन प्रणाली, चयन एवं निष्कासन द्वारा किसान अपनी बकरियों की उत्पादकता बढ़ा कर लाभ कमा सकते हैं। प्रजनन का कोई भी कार्यक्रम शुरू करने के पहले किसान भाइयों को अपनी बकरियों को पहचान चिन्ह या संख्या देनी होगी ताकि प्रत्येक बकरी के लिये उनकी स्थिति के आधार पर प्रबन्ध व्यवस्था, प्रजनन कार्यक्रम, चयन एवं निष्कासन का कार्यक्रम तय किये जा सकें तथा बकरियों से आँकड़े एकत्र किये जा सकें। इन्ही आँकड़ों के आधार पर ही चयन, निष्कासन तथा प्रजनन के कार्यक्रम चलाकर बकरियों की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। व्यवसायिक अथवा वैज्ञानिक ढंग से बकरी पालन के लिये तथा प्रबन्धन को सफल बनाने के लिये फार्म पर विभिन्न गतिविधियों के अभिलेख बनाने अति आवश्यक हैं। इसी तरह जानवरों के पोषण के लिये तथा उनके उपचार के लिए भी अभिलेख प्रबन्धन करना आवश्यक होता है क्योंकि पुराने अभिलेखों के आधार पर ही भविष्य की कार्य योजना तैयार होती है तथा वर्तमान में उचित प्रबन्धन किया जा सकता है। प्रक्षेत्र पर अभिलेख बनाने के निम्न लाभ हैं।

वरण तथा निष्कासन : पशुओं के वरण तथा निष्कासन उनके प्रदर्शन के आँकड़ों के आधार पर किया जाता है। जैसे- मांस के लिये उत्पन्न किये जाने वाले पशुओं में

जिनकी बढ़वार ठीक नहीं है उनका निष्कासन उनके अभिलेख/रिकार्ड को देखकर आसानी से किया जा सकता है। जिन मादाओं का दुग्ध उत्पादन कम है उनके भी रिकार्ड को देखकर उन्हें रेबड़ से निष्कासित किया जा सकता है।

संतति परीक्षण : दूध उत्पादन के अभिलेख को देखकर यह भी आसानी से पता किया जा सकता है कि किन बकरों की संतानों अच्छा दूध दे रही हैं। उस आधार पर उनका चयन भविष्य के प्रजनन कार्यक्रम के लिये किया जा सकता है। बकरों से उत्पन्न संतानों के दूध अथवा वजन का तुलनात्मक अध्ययन संतति परीक्षण के लिये किया जा सकता है जिससे यह ज्ञात हो जाता है कि वास्तव में उन बकरों में कितनी योग्यता है जो कि उनकी संतानों द्वारा प्रकट की जाती है।

चयनित प्रजनन : प्रजनन के लिये योग्य नर एवं मादा का चयन उनके व्यक्तिगत प्रदर्शन तथा उनकी संतानों के प्रदर्शन के आधार पर किया जा सकता है। जो नर तथा मादा तय किये गये लक्ष्य के आधार पर प्रदर्शन करते हैं चयनित प्रजनन में उनको ही प्रजनन के लिये प्रयोग किया जाता है।

घनिष्ठ अन्तः प्रजनन को रोकना : अभिलेखों के अधार पर यह पता किया जा सकता है कि कौन सा पशु किस-किस पशु का संबन्धी है तथा उनका आपस का सम्बन्ध कितनी मात्रा में है। घनिष्ठ संबन्धी पशुओं को आपस में प्रजनन के लिये प्रयोग नहीं करके घनिष्ठ अन्तःप्रजनन को रोका जा

सकता है जिससे पशुओं की जीवन क्षमता एवं उत्पादन क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े।

पशुओं के चारे-दाने की व्यवस्था : पशु का वजन, दुग्ध उत्पादन तथा उम्र के आधार पर पशुओं के चारे-दाने की मात्रा प्रतिदिन के हिसाब से दी जा सकती है तथा भविष्य के लिये चारा दाने का भण्डारण किया जा सकता है। इसी आधार पर पशु के लिये संतुलित आहार तैयार किया जा सकता है।

पशुओं के इलाज में सहायता : पशुओं की बीमारी की तिथि, उनको दी गई दवायें, पशु की उम्र, बीमारी के लक्षण आदि के अभिलेख तैयार करने से पशुओं को खास उम्र, मौसम तथा खान-पान के आधार पर होने वाली बीमारियों का पता चल जाता है जिससे उनका पहले से बचाव किया जा सकता है।

वित्तीय जानकारी : वित्तीय अभिलेख तैयार करने से प्रतिदिन, प्रतिमाह तथा प्रतिवर्ष का खर्चा तथा लाभ की गणना आसानी से की जा सकती है। यदि प्रक्षेत्र में हानि हो रही है तो उन कारणों की आसानी से पहचान की जा सकती है जिसके कारण प्रक्षेत्र में घाटा हो रहा है। कारणों का निदान करके प्रक्षेत्र को लाभ में लाया जा सकता है। अभिलेख प्रबन्धन में कई तरह के रजिस्टर (दस्तावेज) तैयार किये जाते हैं। मुख्य रूप से रजिस्टर बकरियों की संख्या के अनुसार किसान बना सकते हैं।

- साकेत भूषण

सेवानिवृति

31 मार्च, 2013 को संस्थान के तकनीकी अधिकारी श्री अभिराम सिंह ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की लम्बी सेवाओं के बाद सेवानिवृति प्राप्त की। इस अवसर पर संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उन्हें भावभीनी विदाई दी। समारोह में उपस्थित निदेशक महोदय एवं स्वास्थ्य विभाग के वैज्ञानिकों ने श्री अभिराम सिंह के कार्यों की सराहना करते हुए उनके सुखद भविष्य एवं लम्बी आयु की कामना की।



मेमनों के प्रमुख रोग एवं बचाव

मेमनों में प्रमुख रोग निम्न हैं -

1. अतिसार (कोलीबैसिलोसिस)

यह रोग ई0 कोलाई जीवाणु द्वारा होता है। गंदे पशु बाड़े, बाड़ों में बच्चों की भीड़, मां के अस्वच्छ थन से दूध पिलाने व ज्यादा मात्रा में दूध पिलाने से दस्त हो जाते हैं तथा बीमारी के फैलने का डर बना रहता है। इस रोग में बच्चों की मृत्यु दर काफी होती है।



इस रोग से ग्रसित मेमनों में बच्चों में बुखार आ जाता है। इसके साथ ही पीले या सफेद रंग के दस्त होते हैं। मेमने खाना पीना छोड़ देते हैं। चूंकि यह जीवाणु आंतों में जहर बनाता है उसके प्रभाव से बच्चों में लड़खड़ाहट, खड़े होने में परेशानी व दस्त के कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है।

बीमारी हो जाने पर रोगग्रस्त बच्चों को अलग करके उनका उपचार करते हैं। इसके अन्तर्गत एन्टीबायोटिक्स व शरीर में पानी की कमी की दशा में इलेक्ट्रोलाइट पाउडर पिलाना अथवा डैक्स्ट्रोज सेलाइन को सुई द्वारा आवश्यकतानुसार देना चाहिए।

रोकथाम -

1. बच्चों को पैदा होने के आधे से एक घंटे के बाद दिन में 4-6 बार खीस (कोलेस्ट्रम) वजन के 10 प्रतिशत मात्रा में अवश्य पिलाना चाहिए।
2. आवश्यकता से अधिक दूध नहीं पिलाना चाहिए इससे अपच के कारण दस्त होने की सम्भावना बनी रहती है।
3. बच्चे को दूध पिलाने से पहले माँ/ बकरी के थन पोटोश के घोल से धोकर साफ कपड़े से पोंछ लेना चाहिए।
4. बच्चे को यदि बर्तन/ बोतल से दूध पिलाया जा रहा है तो बर्तन/ बोतल हमेशा साफ रखें और प्रतिदिन गर्म पानी से धोएँ।

2. न्यूमोनिया

यह संक्रामक रोग है तथा दूषित/संक्रमित, पानी/ दाना/ चारा खाने से यह स्वस्थ पशुओं में फैलता है। इस बीमारी में रोगी पशु को तेज बुखार के साथ आँख व नाक से पानी बहता, सांस लेने में कठिनाई होती है। समय पर उपचार न होने पर 1-2 दिन में मृत्यु भी हो जाती है। तुरन्त रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग करके, एन्टीबायोटिक्स की सुई आवश्यकतानुसार मात्रा में पशु चिकित्सक की सलाह से देने से रोग का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

3. टिटनेस

जन्मोत्तर नाभि में संक्रमण होने से टिटनेस रोग की संभावना बढ़ जाती है। इस रोग में रोगी पशु के शरीर की सभी मांसपेशियां अकड़ जाती हैं जिससे हाथ, पैर, पूछ, कान सभी अकड़ जाते हैं तथा जल्दी ही मृत्यु हो जाती है। इस रोग का सफल उपचार नहीं हो पाता है इसके बचाव के लिए पैदा होने के बाद नाभि पर टिन्चर आयोडीन घोल नियमित रूप से लगाना चाहिये।

बच्चों में रोग से बचाव के लिए महत्वपूर्ण प्रवन्धन :

1. प्रतिदिन बाड़ों की नियमित रूप से सफाई करनी चाहिये तथा गंदगी को बाड़ों से काफी दूर बने गड्डों में दबा देना चाहिए।
2. बाड़ों के अन्दर व बाहर नियमित रूप से सप्ताह में एक या दो बार बिना बुझे चूने को छिड़काव करें जिससे सूक्ष्मजीवी की संख्या को कम किया जा सके।
3. प्रतिमाह बाड़ों के अन्दर फर्श पर सूखा घास-फूस डालकर जला देना चाहिए। जिससे बाड़ों के भीतर तथा बाहर पूर्ण विसंक्रमण हो जाता है।
4. प्रति तीन चार माह के अन्तराल पर बाड़ों की जमीन की मिट्टी कम से कम 6 इंच तक खोद कर निकाल दें व नई



साफ मिट्टी भर देने से संक्रमण की सम्भावना कम हो जाती है।

5. सप्ताह में कम से कम एक या दो दिन पोटेशियम परमैंगनेट युक्त पानी बकरियों तथा मेमनों को अवश्य पिलायें।
6. नवजात मेमनों में नाभिसूत्र काट कर टिन्चर आयोडीन से नियमित रूप से सुबह शाम कम से कम तीन दिन तक अवश्य नाभ लेप करें।
7. नवजात मेमनों के पैदा होने के बाद साफ करके तुरन्त खीस पिलाएं, जेर गिरने का इन्तजार न करें।
8. पैदा होने के सप्ताह भर बाद खेजड़ी, छोकरा, बबूल इत्यादि

की पत्तियां खाने के लिए रखनी चाहिए जिससे उन में रूमन का जल्दी से जल्दी विकास हो सके।

9. नवजात मेमनों को खनिज लवणयुक्त मिश्रण चाटने के लिए अवश्य रखें जिससे उन्हें मिट्टी खाने से रोका जा सके। इससे उनकी शारीरिक वृद्धि के लिये आवश्यक खनिज तत्वों की पूर्ति भी होगी और मिट्टी खाने से होने वाली विभिन्न बीमारियों से बचाया जा सके।
10. मेमनों को वयस्क बकरियों से अलग रखें।
11. बीमार मेमनों को स्वस्थ जानवरों से अलग रखकर उनका उचित उपचार एवं देखभाल करनी चाहिए।

- अशोक कुमार

प्रथम आमाशय की अम्लता (रुमिनल एसिडोसिस)

सघन पद्धति में पाली जाने वाली बकरियों में प्रथम आमाशय की अम्लता एक गम्भीर समस्या है।

रोग जन्म -

प्रायः बकरियाँ आवश्यकता से अधिक अनाज उदाहरणतः गेहूँ, जौ, दलिया, आटा, रोटी अथवा दाना खा जाती हैं ऐसे में प्रथम आमाशय (रूमन) में पाया जाने वाले रूमन द्रव्य अधिक अम्लीय हो जाता है तथा उसका पी.एच. 5 से कम हो जाता है। जिससे प्रथम आमाशय में पाये जाने वाले सूक्ष्म जीवी मर जाते हैं और लैक्टिक एसिड बनाने वाले स्ट्रेप्टोकोकाई की संख्या रूमन द्रव्य में बढ़ जाती है। प्रथम आमाशय की अम्लता बढ़ने के कारण विटामिन बी विशेषकर थाइमिन की कमी हो जाती है क्योंकि प्रथम आमाशय में ठीक से बन नहीं पाता और पोलिएनसिफलोमलेशिया की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

लक्षण

अपच, क्षुदाहीनता, उदासीनता, अफरा (पेट फूलना), दस्त (दस्त में कभी कभी अनाज के दाने) भी मिलते हैं। निर्जलीकरण, दाँत किटकटाना, पैरों के

तले में सूजन व दर्द, दुग्ध उत्पादन कम होना तथा रोग की तीव्र अवस्था में बकरी की अचानक मृत्यु हो जाना इस रोग के अन्य लक्षण हैं।

उपचार

बकरी पालक को तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर बकरी का उपचार कराना चाहिए क्योंकि रोग की तीव्र अवस्था में अक्सर पशु की मृत्यु हो जाती है। सोड़ा बाइकार्ब (2-5 प्रतिशत) अंतः शिरा रूप से देना उपचार में अत्यन्त सहायक है। स्थिति गम्भीर होने पर पशु के प्राणों की रक्षा के लिए प्रथम आमाशय (रूमन) की शल्य क्रिया द्वारा अधिक अनाज दाने को निकाल देना चाहिए।

प्रभावित बकरी को 20 ग्राम खाने का सोड़ा (सोडियम बाइकार्बोनेट) सुबह-शाम देना चाहिए। रूमेटोन, एनोरेक्सिन, वोवीरॉन इत्यादि जैसी रूमेटोरिक दवायें देनी चाहिए।

प्रथम आमाशय की अम्लता रक्त अम्लता को बढ़ा देती है। जिससे पशु के शरीर में हिस्टामिन तथा अन्य जीव विषय बन जाते



हैं। इससे प्रायः पशु के पैरों के तले में सूजन व दर्द होने लगता है। ऐसी स्थिति में पशु को एन्टीहिस्टामिनिक दवायें जैसे एविल (2-8 मि0ली0) अंतः मांशपेशीय रूप से लगानी चाहिए।

विटामिन बी अथवा लीवर एक्सट्रेक्ट जैसे बेलामिल, हिविट इत्यादि 2-3 मि0ली0 अंतः मांशपेशीय रूप से लगाना उपचार में सहायक है।

बचाव

पशु को कभी भी आवश्यकता से अधिक दाना अथवा अनाज न दें।

- नितिका शर्मा, अनिल कुमार मिश्रा, विनय चतुर्वेदी एवं सौविक पाल

बकरी एवं उनके उत्पादों का विपणन: समस्याएँ एवं सुझाव

पशु एवं पशु उत्पाद विपणन राज्य एवं अनुसंधानकर्ताओं के लिए बहुत ही उपेक्षित क्षेत्र रहा है, जिसका कारण है बकरी बाजार से सम्बन्धित सूचनाओं का अभाव एवं असन्तोषजनक विपणन व्यवस्था। बड़े जानवरों की तुलना में लघु रूमंथी पशुओं के बाजार बहुत ही कम संख्या में है। इन जानवरों का विपणन या तो घर के दरवाजे पर होता है अथवा प्रतिवर्ष एक भाग से दूसरे भाग में प्रवास करने वाले रेबड़ के प्रवासशील रास्तों में जानवरों का विपणन होता है। बकरी पालक मुख्य रूप से जीवित जानवर खास तौर से नर पशु एवं कुछ हद तक दूध एवं खाद बकरी उत्पाद के रूप में बेचते हैं। असंगठित विपणन के कारण बाजार में दलालों की दखलंदाजी, विपणन के लिए ले जाने हेतु अनावश्यक यातायात का व्यय एवं यातायात के दौरान जानवरों की मृत्यु के कारण उत्पादक एवं उपभोक्ता दोनों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से हानि होती है। यह निश्चित है कि बकरी पालन से अधिक आमदनी प्राप्त की जा सकती है, बशर्ते बकरी उत्पादन एवं व्यापार संगठित रूप से किया जाए। सामान्यतः बकरी पालक, जानवरों की बिक्री शर्तों से अनभिज्ञ रहते हैं साथ ही वह अपनी घरेलू आवश्यकता की पूर्ति हेतु जानवरों को कम दामों पर बेच देते हैं।

कुल वार्षिक बिक्री अनुसार जीवित बकरियों का अधिकतर हिस्सा अक्टूबर एवं फरवरी माह में बेचा जाता है, क्योंकि इस समय त्योहारों के कारण बाजार में इनकी माँग अधिक होती है। अतः इस समय पर बकरी बेचने से अधिक दाम प्राप्त होते हैं। सर्दियों में विशेषरूप से चारागाह के स्रोतों की कमी के कारण किसान अपने पास उपलब्ध अतिरिक्त बकरियों को बेच देते हैं।

सामान्यतः बाजार में बकरियों का आगमन 7-15 कि०मी० की परिधि से होता है। बकरी एवं भेड़ का व्यापार पूर्णतः पास के शहर के व्यापारियों/कसाईयों के हाथ में होता है, क्योंकि वे किसान से अच्छी गुणवत्ता की बकरियाँ खरीद लेते हैं। प्रायः यह भी देखा गया है कि शुरू के घण्टों में बाजार भाव तेज रहता है ज्यों-ज्यों दिन गुजरता जाता है, बाजार भाव गिरने लगता है। कुछ स्तर की खरीद एवं बिक्री के बाद व्यापारी बकरी खरीदना नहीं चाहते तथा किसान इसके विपरीत बेचना चाहता है। अतः माँग कम होने के कारण बकरी के भाव कम हो जाते हैं।

देश के अधिकतर हिस्सों में पशु बाजार बकरियों को इकट्ठा करने एवं वितरण करने की भूमिका अदा करते हैं। शहरी कसाई एवं खरीददार तक पहुँचने से पहले जानवर विभिन्न चैनलों से होकर

गुजरता है। बकरी विपणन प्रायः दो प्रकार के बाजारों में होता है - 1. वितरण बाजार एवं 2. साप्ताहिक बाजार। वितरण बाजार देश के बड़े शहरों एवं कुछ कस्बों में स्थित हैं। ज्यादातर वह वधशाला परिसर अथवा उनके निकट स्थानों पर स्थित हैं जिन्हें बकरा/बकरी मंडी के नाम से जाना जाता है। वे हमेशा प्रातःकाल में पशुवध के समयानुसार लगता है। खरीददार शहरी कसाई होते हैं, जबकि बेचने वाला बाहर का व्यापारी होता है। साप्ताहिक बाजार / हाट प्रत्येक सप्ताह के निश्चित दिन शहरी एवं अर्द्धशहरी केन्द्रों पर लगाई जाती है। साप्ताहिक बाजार प्रायः पंचायत, नगरपालिकाओं के नियन्त्रण में होते हैं। बहुत से मामलों में ये प्राइवेट पार्टियों को नीलामी द्वारा आवंटित कर दी जाती है। ये प्राइवेट ऑपरेटर बाजार का प्रबंध एवं बिक्रीकर्ता से बाजार फीस वसूलते हैं। ये फीस एक बाजार से दूसरे बाजार में भिन्न होती है। बकरी के विपणन में यह फीस रू. 10-25 प्रति बकरी होती है। प्रायः बकरी बाजार खुले मैदानों में जहाँ पशुओं एवं व्यापारियों के ठहरने एवं पेयजल की कोई उचित व्यवस्था नहीं होती लगाये जाते हैं। बिना बिके जानवर गाँवों को वापस ले जाए जाते हैं, जो अगले बाजार के दिन पुनः लाए जाते हैं।

मध्यस्थ व्यापारी बहुत बड़ी संख्या में राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश के अनेक हिस्सों से बकरियाँ इकट्ठी करते हैं। तदुपरान्त उन्हें बड़े पशु बाजार जैसे-दिल्ली, मुम्बई, जम्मू कश्मीर को ले जाया जाता है। कलकत्ता एवं मुम्बई, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार एवं उड़ीसा राज्यों में लगने वाले बाजार देश के प्रमुख बाजार हैं। बकरियों का निर्यात मुख्यतः कांडला पोर्ट से अरब देशों के लिए किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से बकरी पालन के व्यवसायीकरण से बकरियों का अन्तर्राज्यीय आवागमन बढ़ा है। विभिन्न राज्यों के व्यवसायिक बकरी पालक विशेष रूप से सिरोही, बरबरी, उस्मानावादी एवं



जमुनापारी बकरियों को उनके गृह क्षेत्रों से खरीद रहे हैं एवं अन्य राज्यों में इनका पालन कर अधिक से अधिक लाभ कमा रहे हैं।

देश के अधिकतर माँस खाने वाले लोगों के लिए माँस खाना अभी तक एक विलासता का विषय बना हुआ है। इसका उपभोग त्योहारों के समय बढ़ जाता है। अतः इनकी माँग बढ़ने के साथ शीत ऋतु में इसकी कीमत भी बढ़ जाती है। शीत ऋतु के दौरान चारागाह स्रोतों की कमी एवं आवास की समुचित व्यवस्था का अभाव रहता है इसलिए अच्छी कीमतों का मिलना उनके लिये लाभ दायक रहता है। बकरी माँस की माँग प्रायः ग्रीष्म ऋतु में कम होती है एवं बकरी पालकों द्वारा मानसून से पहले, अधिक संख्या में बिक्री के कारण भी इनकी कीमतों में खासी गिरावट आती है। राजस्थान से बकरी एवं भेड़ के रेबड़ आने के कारण कुछ क्षेत्रों में प्रति बकरियों की कीमत रु. 100-200 तक कम हो जाती है, क्योंकि बकरियों की माँग कम होने तथा आपूर्ति अधिक होने से कीमतें घट जाती है। मानसून के दौरान किसान रेबड़ में बकरियों की संख्या कम रखते हैं क्योंकि इन दिनों बीमारियों के कारण बकरियों की मृत्यु अधिक रहती है। दूसरे बकरियों की समुचित आवास व्यवस्था का अभाव रहता है। अतः मानसून के दौरान किसान कोई नई इकाई नहीं लगाते हैं।

बकरी पालकों के लिये यद्यपि अशिक्षा एवं जागरूकता की कमी सबसे बड़ी रूकावट है, लेकिन बकरी विपणन में कुछ अन्य परेशानियाँ भी हैं। जैसे-बकरी व्यापार में पारदर्शिता की कमी, मूलभूत सुविधाओं का अभाव एवं पशुचिकित्सकों की कमी।

समय से बाजारी सूचनाओं की उपलब्धता किसानों के लिए महत्वपूर्ण होती है। जिससे कि वह जानवरों के बेचने का निर्णय सही समय पर ले सकते हैं। संगठित प्रयास से आवश्यक है कि समय से बाजार की सूचना किसानों को दी जा सके। बकरी बाजार में कोई निगरानी एजेन्सी नहीं है जो कि व्यापारी एवं बाजार के बीच मिलीभगत की जाँच एवं इसे नियंत्रित कर सके। यह अच्छी प्रकार से स्वीकार किया गया है कि बकरी माँस की कीमत का निर्धारण शारीरिक वजन के आधार पर करना चाहिए। हालांकि किसी भी बाजार में तोल की सुविधा उपलब्ध नहीं है। पशुधन बाजार समिति में बकरी किसानों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं होता है। किसानों का बाजार एवं प्रबन्ध समितियों में प्रतिनिधित्व से उनकी समस्याओं का समाधान हो सकता है। बकरी के यातायात के दौरान किसानों/व्यापारियों को परेशानी होती है। यहाँ पर एक सही मानक निर्धारित करने की आवश्यकता है जिससे पशुधन यातायात एवं व्यापार को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके।

- ए.के. दीक्षित, बृजमोहन, खुश्याल सिंह एवं यू.सी. यादव

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

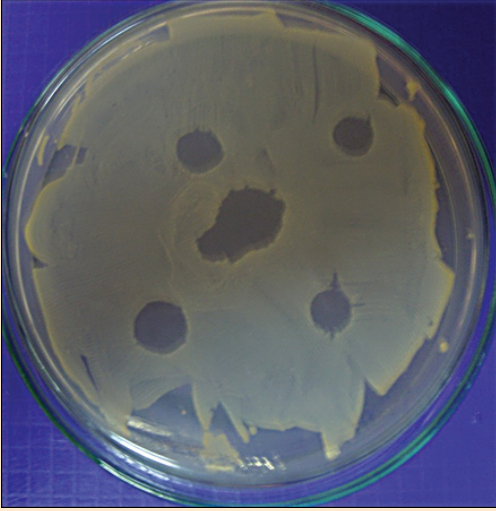
संस्थान में दिनांक 26 मार्च, 2013 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा किया गया। इस अवसर पर आगरा से पधारे बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री शीलेन्द्र कुमार वशिष्ठ मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. एस. के. अग्रवाल ने हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री शीलेन्द्र वशिष्ठ जी ने हिन्दी भाषा के राष्ट्रीय महत्व को रेखांकित किया, साथ ही अपना कविता पाठ भी किया। कार्यशाला में संस्थान के कर्मचारियों की अच्छी सहभागिता थी। धन्यवाद ज्ञापन डा. भुवनेश्वर राय, सदस्य, राजभाषा समिति द्वारा किया गया।



जीवाणुभोजी एण्डोलाइसिन : एक नवीन चिकित्सीय अभिकर्ता

एण्डोलाइसिन जीवाणुभोजियों द्वारा कोडित हाइड्रोलेस हैं जो जीवाणुभोजी जननचक्र की अंतिम अवस्था में जीवाणु कोशिकाद्रव्य में संश्लेषित होते हैं। एण्डोलाइसिन को उनकी पोषी कोशिकाभित्ति की पेप्टिडोग्लाइकैन के सह संयोजक बंधों को तोड़ने की क्षमता के लिए जाना जाता है जो जीवाणुभोजियों की नयी एकत्रित संततियों को बाहर निकालने के लिए आवश्यक है। जीवाणु के अन्दर से पेप्टिडोग्लाइकैन स्तर तक एण्डोलाइसिन की पहुंच, लघु जलविरामी प्रोटीन, जिन्हें होलिन कहते हैं, पर निर्भर करती है। होलिन एण्डोलाइसिन को आन्तरिक झिल्ली से पार करने में मदद करती है।

आजकल प्रतिजैविक-प्रतिरोधकता की समस्या अत्यधिक तेजी से बढ़ रही है। अतिशय या बहु प्रतिजैविक-प्रतिरोधी रोगजनक जीवाणुओं के आने से प्रतिरोधकता की समस्या और अधिक गहरा गयी है। इसी कारण से विश्वभर के वैज्ञानिकों का ध्यान अब दूसरे



स्टैफाइलोकोकस ऑरिस जीवाणु के विरुद्ध एण्डोलाइसिन की प्रभावशीलता

वैकल्पिक उपचारों पर गया है। इस संदर्भ में एण्डोलाइसिन एक अच्छा विकल्प है।

एण्डोलाइसिन का प्रयोग प्रतिजैविक उपचार की तुलना में कई तरह से लाभकारी है :-

1. एण्डोलाइसिन का प्रभाव अतितीव्र व प्रबल होता है।
2. ये बहु/अतिशय प्रतिजैविक-प्रतिरोधी जीवाणुओं के विरुद्ध भी प्रभावी पाई गयी हैं।
3. इनसे प्रतिरोधकता की समस्या नहीं होती है।
4. एण्डोलाइसिन के द्वारा उपचार से विषाक्त प्रभाव नहीं होते हैं।
5. इनके प्रयोग से शरीर में सूक्ष्मजैविक असंतुलन नहीं होता है।
6. इनके प्रयोग से दूध, मांस, अण्डा तथा अन्य पशु उत्पादों में विषाक्त अवशेषों के पाये जाने की समस्या नहीं होती है।
7. एण्डोलाइसिन उपचार में द्वितीयक जीवाणु संक्रमण होने की संभावना कम होती है।
8. एण्डोलाइसिन जीवाणु के स्वरूप को भी मारने में सक्षम है।

एण्डोलाइसिन उपचार विभिन्न प्रकार के संक्रमणों को करने वाले भाँति-भाँति के जीवाणुओं के विरुद्ध काफी प्रभावशाली पाया गया है। एण्डोलाइसिन की चिकित्सीय प्रभावशीलता स्टैफाइलोकोकस ऑरिस, ई0 कोलाई, एजोटोबैक्टर, एअरोबैक्टर क्लोएकी, बेसिलस मेगाटीरिस, क्लेबसिएल्ला न्यूमोनी, स्ट्रेप्टोकोकस एरुजिनोसा, लैक्टोकोकाई, ल्यूकोनॉस्टाक, लैक्टोबेसिलाई आदि जीवाणुओं के खिलाफ पाई गयी हैं। इस प्रकार एण्डोलाइसिन चिकित्सीय अभिकर्ताओं के एक नवीन वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

- अनिल कुमार मिश्र, नितिका शर्मा व सौविक पाल

संस्थान में विश्व पशुचिकित्सा दिवस

विश्व पशुचिकित्सा दिवस के अवसर पर दिनांक 27 अप्रैल, 2013 को संस्थान में भव्य आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान में आयोजित सेमिनार में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. शूरवीर सिंह ने व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि मूक पशुओं के इलाज में पशु चिकित्सक की भूमिका अति महत्व के साथ उत्तरदायित्व पूर्ण है। पशुधन का देश के कृषि विकास में बहुत बड़ा योगदान होने के कारण इस संपदा को सुरक्षित, संरक्षित रखने की बड़ी जिम्मेदारी पशु चिकित्सकों को निभानी है। उपस्थित सभी वैज्ञानिकों ने सक्रिय रूप से कार्यक्रम में भूमिका निभाई।



संस्थान में फार्म प्रवर्तक दिवस

दिनांक 27 अप्रैल 2013 को संस्थान परिसर में द्वितीय फार्म प्रवर्तक दिवस का आयोजन किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रेरित इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से आये बकरी पालकों के साथ संस्थान वैज्ञानिकों एवं उद्यमियों ने भागीदारी की। फार्म प्रवर्तक दिवस के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डा. ए.के. मिश्रा, उपकुलपति, महाराष्ट्र पशु एवं मात्स्यी विज्ञान विश्वविद्यालय नागपुर ने की। इस अवसर पर बोलते हुए डा. मिश्रा ने बकरी को भविष्य का पशु बताया। उन्होंने कहा कि लघु आकार, त्वरित वृद्धि एवं अल्पावश्यकता वाले गुणों के कारण वर्तमान परिस्थितियों में बकरी अति उपयोगी पशु है। उन्होंने कहा कि बकरी मेमनों में मृत्यु दर अभी भी एक समस्या है परन्तु उत्तम आहार, साफ सफाई एवं टीकाकरण से हम इस समस्या पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। डा. मिश्रा ने केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के शोध प्रयासों की सराहना की और कहा कि वैज्ञानिक सूचनाओं को अधिकाधिक सार्वजनिक बनाये जाने की आवश्यकता है। इस अवसर पर उपस्थित डा. भुवनेश कुमार गंगवार, उप संचालक, कृषि उत्तर प्रदेश सरकार मथुरा ने अपने अभिभाषण में बकरी पालकों को विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी और उन्हें इनका लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। पूर्व में संस्थान प्रबन्ध समिति सदस्य एवं जाने माने बकरी



उद्यमी श्री दीपक पाटीदार ने भी अपने अनुभव बकरी पालकों के साथ बांटे और उन्हें वैज्ञानिक बकरी पालन के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के शुरू में संस्थान निदेशक डा. एस.के. अग्रवाल ने सभी उपस्थित अतिथियों एवं बकरी उद्यमियों का स्वागत किया और संस्थान के वैज्ञानिक उपलब्धियों से अवगत कराया। इस अवसर पर आयोजित बकरी पालकों एवं वैज्ञानिक पारस्परिक वार्ता सत्र अत्यन्त आकर्षक रहा जिसमें किसानों द्वारा अपने द्वारा किये गये प्रयोग अनुभव और उनके लाभ-हानि आपस में बांटे और समाधान तलाशे। नवोदित बकरी पालकों एवं सफल उद्यमियों को इस अवसर पर संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।

बकरी पालन से आजीविका सुरक्षा

किसानों की आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम / परियोजना आई.वी.आर.आई., इज्जतनगर, बरेली के माध्यम से चलाई जा रही है। संस्थान के अतिरिक्त पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, सी. आई.एस.एच., लखनऊ एवं सी.एस.एस.आर.आई., क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ आदि भी सहभागी के रूप में संलग्न हैं। इस परियोजना को कम्पोनेन्ट-3 के अन्तर्गत रायबरेली एवं बारावकी (उ.प्र.) के जिलों में वर्ष 2009-10 से चलाया जा रहा है। इसमें रायबरेली जिले के लालगंज व बारावकी जिले के हैदरगढ़ एवं त्रिवेदीगंज क्षेत्र के करीब 22 गाँवों में संचालित किया गया है। वर्ष 2012-13 तक परियोजना के द्वारा सहायता प्राप्त किसानों की संख्या 5200 थी। परियोजना द्वारा



सभी सहयोगी संस्थानों के लक्ष्य निर्धारित किये गये थे, जिसमें उच्चतर लक्ष्य की प्राप्ति हुई है। हमारे संस्थान द्वारा 100 किसानों को बकरियाँ वितरित करने का लक्ष्य था इसके अन्तर्गत अब तक 250 किसानों को सिरोही एवं बरबरी नस्ल की 473 वयस्क बकरियाँ एवं 59 अच्छे किस्म के नर वितरित किये जा चुके हैं। इस परियोजना में विभिन्न श्रेणी के किसानों के लिए कई एकीकृत कृषि प्रणालियों को विकसित किया गया तथा इस पर शोध करके इसकी उपादेयता को सिद्ध किया गया। बकरी आधारित मॉडल के अन्तर्गत एक किसान को 4 सिरोही बकरियाँ दी गईं, इसके साथ मुर्गी के उन्नत नस्ल के 200 चूजे दिये गए। किसान के घर के पास खाली जमीन पर ग्लैडीओलस फूल को लगवाया गया तथा साथ ही मौसमी फल एवं सब्जियाँ भी लगाई गईं। एकीकृत कृषि प्रणाली का यह मॉडल भूमिहीन एवं सीमान्त किसानों के लिए काफी लाभकारी सिद्ध हुआ। दो वर्षों के अन्तराल पर यह पाया गया कि यह मॉडल गरीब किसानों के दैनिक खर्च को चलाने में पूर्ण रूप से सक्षम है। इसे और व्यवस्थित करके अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सिरोही बकरियों ने इस दौरान दो बार मेमनें पैदा किये।

- बी. राय

प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

प्रशिक्षण

- ◆ संस्थान के प्रसार शिक्षा एवं सामाजिक अर्थशास्त्र अनुभाग द्वारा दिनांक 11-15 मार्च, 2013 की कालावधि में बिहार प्रांत के सिवान जिले के किसानों के लिए एक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में कुल 19 बकरी पालकों ने भागीदारी की। 5 दिवसीय इस प्रशिक्षण में किसानों को बकरी नस्ल सुधार, उत्तम आहार एवं स्वास्थ्य समस्याओं के निराकरण पर विशेषज्ञों के व्याख्यानों के अतिरिक्त प्रक्षेत्र विशेषज्ञों के स्थानीय प्रशिक्षण पर अधिक जोर दिया गया। प्रशिक्षण में बकरी पालन के नई तकनीकियों के बारे में जानकारी प्रदान की गयी। इस प्रशिक्षण के प्रायोजन में गैर सरकारी संस्था आत्मा की सराहनीय भूमिका रही।
- ◆ **बैफ पर्यवेक्षक प्रशिक्षण** - दिनांक 1-8 मार्च, 2013 की अवधि में बैफ (भारतीय कृषि उद्योग फाउन्डेशन) से आये कुल 10 पर्यवेक्षकों का एक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित किया गया जिसका विषय 'बकरी उत्पादन एवं स्वास्थ्य प्रबन्धन' था। इस प्रशिक्षण में बकरी के उत्पादन एवं स्वास्थ्य समस्याओं से प्रशिक्षणार्थियों को अवगत कराया गया और उनके निराकरण के विषय में जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण में विषय विशेषज्ञों के व्याख्यानों के अतिरिक्त प्रयोगात्मक शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया। 8 दिन के इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने विशेष भूमिका निभाई।
- ◆ अप्रैल 22 से 27, 2013 की अवधि में संस्थान द्वारा एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बैफ, पुणे के कुल 14 परियोजना अधिकारियों एवं प्रबन्धकों ने भागीदारी की। 'संपोषणीय बकरी उत्पादन के लिए नेतृत्व क्षमता का विकास' विषय पर आयोजित प्रशिक्षण का उद्देश्य बैफ अधिकारियों को किसानों की बकरी पालन की समस्याओं से अवगत कराने के साथ-साथ चुनौतियों को सफलता पूर्वक पार करने हेतु उनके कौशल को बढ़ाना था। विषय विशेषज्ञों की उपस्थिति में इस प्रशिक्षण को सूचना संप्रेक्षण के लिए प्रभावी तरीके से तैयार किया गया था जिसमें क्लास रूम अध्ययन के साथ-2 प्रक्षेत्र भ्रमण भी प्रशिक्षणार्थियों को कराया गया।
- ◆ मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ महिला समाख्या, भारत सरकार शिक्षा विभाग के तत्वाधान में दिनांक 23 मार्च, 2013 को संस्थान द्वारा मथुरा जिले की महिला उद्यमियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण का विषय 'वैज्ञानिक बकरी पालन' था। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण एवं आजीविका सुरक्षा को सुनिश्चित करना था। प्रशिक्षण में कुल 45 महिलाओं ने भागीदारी की। प्रशिक्षण का समन्वयन डा. अशोक कुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं डा. नितिका शर्मा, वैज्ञानिक द्वारा किया गया। प्रशिक्षण में बकरी पालन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई और महिला उद्यमियों के प्रश्नों के उत्तर दिए गए।



◆ दिनांक 23 मार्च, 2013 को राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना (मेवात) अन्तर्गत मेवात हरियाणा के किसानों के लिए 'उन्नत बकरी पालन' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मेवात के पिनगुआ में आयोजित इस प्रशिक्षण में किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रशिक्षण में कुल 53 किसानों की भागीदारी रही जिनमें से कुछ महिला उद्यमी भी थी। प्रशिक्षण में बकरी नस्ल सुधार, चारा एवं आहार प्रबन्धन तथा बकरी स्वास्थ्य समस्याओं के निराकरण के विभिन्न विषयों पर किसानों को जानकारी प्रदान की गई और उनकी समस्याओं का निराकरण किया गया। प्रशिक्षण में व्याख्याता के रूप में केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम के प्रधान वैज्ञानिक डा0 अनिल कुमार गोयल, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 प्रभात त्रिपाठी के अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र मंडकोला के वैज्ञानिकों का योगदान रहा।



मेला

◆ संस्थान के विस्तार शिक्षा अनुभाग ने राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय डेरी मेला में सहभागिता कर केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित बकरी तकनीकियों का प्रदर्शन किया गया। बड़ी संख्या में किसानों द्वारा इन तकनीकियों का अवलोकन किया गया। इस मेले में संस्थान द्वारा लगाई गयी स्टाल ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया गया। इस मेले का आयोजन दिनांक 25-27 फरवरी 2013 तक राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान में किया गया।



◆ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा पूसा में दिनांक 06-08 मार्च 2013 को एक कृषि विज्ञान मेला आयोजित किया गया। केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान द्वारा इस मेले में सहभागिता की गई एवं किसानों को बकरी पालन से होने वाले लाभों के बारे में जानकारी दी गयी। संस्थान द्वारा निर्मित बकरी तकनीकियों का स्टाल द्वारा प्रदर्शन किया गया। मेले की आयोजन समिति द्वारा संस्थान की स्टाल को इसके उत्कृष्ट कार्य के लिये द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



भ्रमण

◆ दिनांक 9 मार्च, 2013 को सार्क देशों के वरिष्ठ अधिकारियों के एक दल द्वारा संस्थान भ्रमण किया गया। विशिष्ट अतिथियों का यह दल 'कृषि आधारित व्यापार प्रबन्धन एवं लघु कृषकों द्वारा कृषि उत्पाद विपणन' कार्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ द्वारा संचालित प्रशिक्षण एवं शैक्षिक भ्रमण पर था और अफ्रीका-एशिया ग्रामीण विकास संगठन एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के पारस्परिक सहयोग से प्रायोजित किया गया। कुल 19 अधिकारियों के इस दल में दक्षिण एशिया समूह के कुल 14 देशों के प्रतिनिधियों ने भागीदारी की। भ्रमण के दौरान विशिष्ट प्रतिनिधि मण्डल ने बकरी पालन से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर चर्चा की और जानकारी प्राप्त की। संस्थान के विभिन्न पशु प्रक्षेत्रों का अवलोकन कर प्रतिनिधि दल ने प्रसन्नता प्रकट की और संस्थान के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।



स्मालनबर्ग विषाणु संक्रमण : रूमंथी पशुओं की एक नई उभरती बीमारी

स्मालनबर्ग विषाणु संक्रमण रूमंथी पशुओं की एक नई बीमारी है जिसे हाल ही में जर्मनी में पहचाना गया है। इस रोग से गौवंश, भेड़ एवं बकरी मुख्य रूप से प्रभावित होते हैं। यह संक्रमण गौवंशी पशुओं में बुखार, भूख न लगना, दुग्ध उत्पादन में आधे से ज्यादा कमी और अतिसार (दस्त) जैसे लक्षण उत्पन्न करता है। भेड़ और बकरियों में रोग मुख्य रूप से भ्रूण एवं नवजात शिशुओं में आनुवंशिकी विकृतियां (आर्थोग्राइपोसिस, ब्रेकीग्नेथिया इन्फीरीयर, टोर्टीकोलिस इत्यादि), गर्भपात और मृतजन्म के रूप में प्रकट होता है जिससे कि पशुपालकों को अत्यधिक आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

यूरोप में जर्मनी एवं हॉलैंड की सरहदों पर स्थित गांवों एवं छोटे शहरों के रूमंथी पशुओं में इस बीमारी को पहली बार देखा गया और जर्मनी के फ्रेडरिक-लोफ्लर इंस्टीट्यूट ने नवम्बर, 2011 में एक नये विषाणु की पहचान की जिसका नाम 'स्मालनबर्ग विषाणु' रखा गया, जो कि जर्मनी के छोटे शहर स्मालनबर्ग पर आधारित है जहां इस बीमारी को पहली बार देखा गया। अभी तक यह विषाणु संक्रमण यूरोप के कई देशों की भेड़-बकरी एवं गौवंशी पशुओं में देखा गया है जिनमें जर्मनी, हॉलैंड, बेल्जियम, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, लक्समबर्ग, स्पेन, ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, एस्टोनिया, स्विटजरलैंड, आयरलैंड, नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड, पोलैंड और तुर्की शामिल हैं। चूंकि यह विषाणु रक्त चूसक क्यूलीकोइड मच्छरों या कीड़ों के काटने पर फैलता है अतः इसके भूमि से सटे हुए देश-देशांतरों में तेजी से फैलने की संभावना रहती है।

स्मालनबर्ग विषाणु 50 से 60°C तापमान पर 30 मिनट रहने पर अपनी संक्रमण क्षमता खो देता है और रसायनों जैसे कि 1 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट, 2 प्रतिशत ग्लूटरएल्डिहाइड, 70 प्रतिशत इथेनॉल एवं फॉर्मैल्डिहाइड इत्यादि से निष्क्रिय हो जाता है। यह विषाणु पशु या वाहक मच्छरों के शरीर से बाहर ज्यादा समय तक जीवित नहीं सकता है।

स्मालनबर्ग विषाणु रक्त चूसक कीटों द्वारा प्रसारित होने वाले अन्य विषाणु जैसे कि अकाबोन, आइनो, सामोण्डा विषाणु की बुनियावाइराइडी फैमिली का आर्थो-बुनियावाइरस वंश का एकल लड़ी आर.एन.ए. विषाणु है। यह विषाणु भेड़, बकरी एवं गौवंशी पशुओं के अतिरिक्त तुर्की की भैंसों, जंगली भैंसा, रेड डीयर, अल्पाका एवं मूफ्लॉन में भी पाया गया है। यह विषाणु अभी तक की जांच के अनुसार मनुष्यों में नहीं फैलता है लेकिन संक्रमित पशु की गर्भावस्था में जेर (प्लेसेन्टा) द्वारा भ्रूण को भी संक्रमित कर विकृतियाँ पैदा कर देता है तथा गर्भपात भी कर देता है।

स्मालनबर्ग विषाणु संक्रमित पशु 3-5 दिन पश्चात बुखार, भूख न लगना, दुग्ध उत्पादन में कमी, दस्त होना जैसे लक्षण प्रदर्शित करता है। गर्भित पशुओं में गर्भपात, मृतजन्म एवं विकृत बच्चे पैदा होते हैं। संक्रमित पशु प्रायः 2-4 सप्ताह में ठीक हो जाते हैं।

स्मालनबर्ग विषाणु रोग की पहचान एलिसा एवं पी.सी.आर. परीक्षण विधि द्वारा की जाती है। विषाणु का अलगन रक्त एवं भ्रूण के मस्तिष्क ऊतक से कर सकते हैं तथा पी.सी.आर. परीक्षण के लिये संक्रमित भ्रूण के अंग एवं रक्त, जेर (प्लेसेन्टा), एम्नियोटिकद्रव एवं मीकोनियम उपयुक्त होते हैं।

इस रोग का पुख्ता निदान करने के लिये अन्य समान लक्षण पैदा करने वाली बीमारियों से निदानांतर करना आवश्यक है जैसे कि ब्लूटंग, एपिज्यूटिक हीमोरेजिक रोग, खुरपका मुंहपका, बोवाइन वाइरल डाइरिया, रिफ्ट वैली फीवर इत्यादि।

अभी तक स्मालनबर्ग विषाणु रोग के लिए कोई इलाज या टीका प्रतिपादित नहीं हुआ है। चूंकि यह रोग बिल्कुल नया है, इस पर गहराई से अध्ययन एवं अनुसंधान अभी चल रहा है। अभी तो इस रोग की रोकथाम विषाणु प्रसारित करने वाले कीड़ों एवं मच्छरों को पशुओं से दूर रख कर ही किया जा सकता है। पशुओं में प्रजनन, अधिक कीट-पतंगों वाले मौसम से बदल कर नवजात विकृतियां कम की जा सकती हैं।

- राजवीर सिंह पवैया

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत

दूरभाष न.: 0565-2763380, फैक्स न.: 0565-2763246

ई-मेल: director@cirg.res.in,

वेबसाइट: http:// cirg.res.in

हेल्पलाइन न.: 0565-2763320

